अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : जैनागम स्तोक वारिधि – तृतीय कक्षा (5 जनवरी, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र. 1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :– **10x1=(10)**

(a) आत्मा का सदा के लिए अपने स्वरूप में स्थित हो जाना, कहलाता है –

क. पुण्य　　ख. निर्जरा

ग. मोक्ष　　घ. जीव　　(　　)

(b) प्रत्येक वनस्पति के भेद होते हैं –

क. 6　　ख. 12

ग. 2　　घ. 5　　(　　)

(c) उरपरिसर्प जीव का प्रकार है –

क. छिपकली　　ख. गैंडा

ग. असालिया　　घ. बिखुरा　　(　　)

(d) नव ग्रैवेयक का भेद नहीं है –

क. आमोह　　ख. यशोधर

ग. आरण　　घ. सुदर्शन　　(　　)

(e) छह काय के जीवों की विराधना से लगने वाली क्रिया है –

क. परियावणिया　　ख. परिग्गहिया

ग. आरम्भिया　　घ. पाओसिया　　(　　)

(f) कौनसे जीव सोते हुये अच्छे होते हैं –

क. पापी जीव　　ख. आत्मार्थी जीव

ग. अधर्मी जीव　　घ. धर्मी जीव　　(　　)

(g) जयन्ती बाई के प्रश्नों का उल्लेख भगवती सूत्र में कहाँ हुआ है –

क. शतक–12,उद्देशक–2　　ख. शतक–12,उद्देशक–3

ग. शतक–12,उद्देशक–4　　घ. शतक–12,उद्देशक–8　　(　　)

(h) गौतम के पूछने पर भगवान ने लोक का विस्तार बताया है –

क. संख्यात कोड़ाकोड़ी योजन　ख. असंख्याता कोड़ाकोड़ी योजन

ग. अनंत कोड़ाकोड़ी योजन　घ. एक कोड़ाकोड़ी योजन　　(　　)

(i) श्वासोच्छ्वास थोकड़े का आधार है –

क. भगवती सूत्र　　ख. आचारांग सूत्र

ग. उत्तराध्ययन सूत्र　　घ. प्रज्ञापना सूत्र　　(　　)

(j) कितने मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण–निर्ग्रन्थ का सुख ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़कर होता है –

क. चार मास ख. तीन मास

ग. ग्यारह मास घ. पांच मास ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में लिखिए – **10x1=(10)**

(a) भूख से कम आहार करना ऊनोदरी है। .....

(b) 'अपरिश्रावी' प्रायश्चित्त लेने वाले का गुण है। .....

(c) एकत्व भावना नमिराज ऋषि ने भाई थी। .....

(d) पाप कर्म 18 प्रकार से भोगा जाता है। .....

(e) 'दर्प' प्रतिसेवना का भेद है। .....

(f) यह लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा। .....

(g) व्यवहार राशि के सभी जीव मोक्ष में जाते हैं। .....

(h) जीव स्वकर्मानुसार जन्म–मरण करता है। .....

(i) श्वासोच्छ्वास मात्र घ्राणेन्द्रिय से ही लिया जा सकता है। .....

(j) ग्यारह मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण–निर्ग्रन्थ का सुख सहस्त्रार देवों से बढ़कर होता है। .....

प्र.3 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए – **10x1=(10)**

(a)	असंमोह	(क) जघन्य 28 पक्ष, उत्कृष्ट 29 पक्ष में	.....
(b)	सिद्धों के भेद	(ख) जघन्य 14 पक्ष, उत्कृष्ट17 पक्ष में	.....
(c)	लोकोपचार विनय के भेद	(ग) 15 भेद	.....
(d)	जयन्ती बाई के प्रश्न	(घ) मोक्ष गति	.....
(e)	व्यवहार राशि के जीव	(च) भगवती शतक–12, उद्देशक–7	.....
(f)	भव–भ्रमण का थोकड़ा	(छ) 7 भेद	.....
(g)	बारहवें देवलोक के देव	(ज) जघन्य 19 पक्ष, उत्कृष्ट 20 पक्ष में	.....
(h)	सातवीं ग्रैवेयक के देव	(झ) शुक्लध्यान	.....
(i)	सातवें देवलोक के देव	(य) जघन्य 12 पक्ष, उत्कृष्ट 22 पक्ष में	.....
(j)	दसवें देवलोक के देव	(र) भगवती सूत्र शतक–12, उद्देशक–2	.....

प्र.4 मुझे पहचानो – **10x2=(20)**

(a) मैंनें धर्म भावना भाई थीं। .....

(b) मैं एक ऐसी अनुप्रेक्षा हूँ जो प्राणातिपात आदि आश्रव द्वारों से होने वाले अनर्थों के चिन्तन से उत्पन्न होती हूँ। .....

(c) मैं जिनेश्वर भगवान की आज्ञा एवं उनके गुणों का चिन्तन करता हूँ।.....

(d) मेरे जघन्य 20 तथा उत्कृष्ट 57 भेद होते हैं। .....

(e) मेरा बंध गुणवानों को नमस्कार करने से तथा उनका विनय करने से होता है। .....

(f) मेरा त्याग करने से जीव, संसार से तिर जाता है। .....

(g) मैं एक ऐसी राशि हूँ, जिसमें रहते हुए जीव कभी मोक्ष नहीं जा सकते हैं। .....

(h) मैं जघन्य 2 पक्ष झाझेरा, उत्कृष्ट 7 पक्ष झाझेरा में श्वासोच्छ्वास लेता हूँ। .....

(i) मैं केवल एक ही इन्द्रिय से श्वास लेता हूँ तथा छोड़ता हूँ। .....

(j) मेरा सुख सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवों के सुख से बढ़कर होता है। .....

प्र.5 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक–दो वाक्यों में दीजिए – (कोई नौ) **9x2=(18)**

(a) नव तत्त्व में कौनसे तत्त्व छोड़ने योग्य हैं तथा कौनसे तत्त्व ग्रहण करने योग्य हैं?

.....

.....

(b) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद हैं?नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

(c) शुक्ल ध्यान के चार आलम्बनों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

(d) अहो भगवन्! जीव के भारी होने का क्या कारण है और किस प्रकार जीव हल्का होता है?

.....

.....

(e) अहो भगवन्! इतने बड़े लोक में क्या ऐसा कोई एक भी आकाश प्रदेश है जहाँ इस जीव ने जन्म–मरण न किया हो?

.....

.....

(f) अहो भगवन्! क्या यह जीव सब जीवों के मातापने, पितापने, भाईपने, बहनपने, स्त्रीपने, पुत्रपने, पुत्रीपने, पुत्रवधूपने उत्पन्न हुआ है?

.....

.....

(g) चार अनुत्तर विमान के देव का श्वासोच्छ्वास लिखिए।

.....

.....

(h) देवताओं में श्वास ग्रहण करने की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

(i) तीन मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण–निर्ग्रन्थ का सुख कितना होता है?

.....

.....

(j) रस परित्याग के 9 भेदों में से प्रथम दो भेद अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन–चार वाक्यों में दीजिए – (कोई आठ) **8x4=(32)**

(a) आठ कर्मों की कुल कितनी प्रकृतियाँ हैं?इनमें से कितनी प्रकृतियों का बन्ध होता है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) धर्मध्यान के चार लक्षणों का अर्थ सहित उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) स्पर्श के 184 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) सत्पद प्ररूपणा द्वार में कितनी मार्गणाओं का उल्लेख हुआ है?कौनसी मार्गणाओं के जीव मोक्ष जा सकते हैं और कौनसी के नहीं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) अहो भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बांधता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) अहो भगवन्! जीव सोते हुए अच्छे या जागते हुए अच्छे? इस प्रश्न का उत्तर भगवान ने क्या दिया?

.....

.....

.....

.....

.....

(g) एक पक्ष कैसे बनता है?उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) दो, तीन, आठ एवं नौ मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण–निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) पच्चीस क्रियाओं में से प्रथम चार क्रियाओं को अर्थ सहित लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....